

माखन चोर

बाल–कविताएं





लेखिका
शान्ता

चित्रकार
भवानी प्रसाद मित्तल

With compliments from –

[signature]





हे भगवान्
तुझे प्रणाम

तेरे बच्चे
हम हों सच्चे

पढ़ें लिखेंगे
योग्य बनेंगे

काम करेंगे
नहीं डरेंगे

नित्य बढ़ेंगे
बढ़े चलेंगे

दो वरदान
हे भगवान्



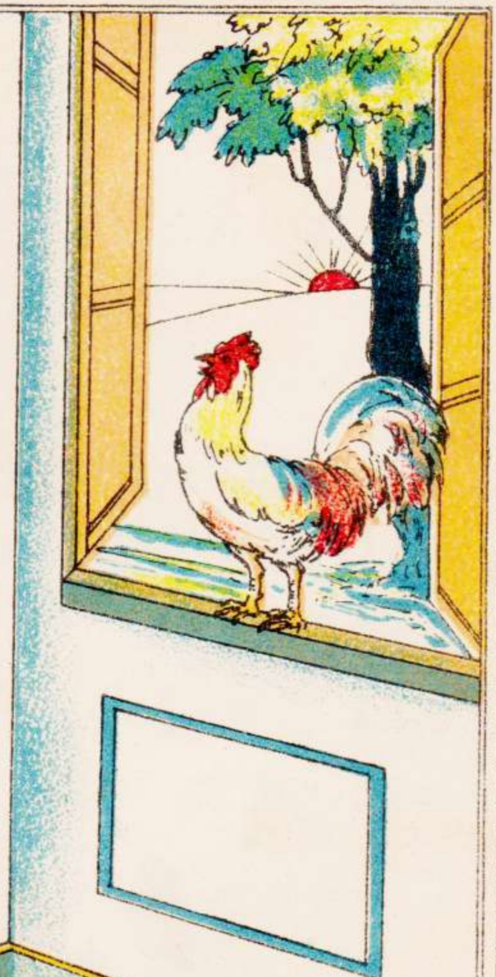
घड़ी करे यह टिक टिक टिक,
गाड़ी चलती छिक छिक छिक।

घंटी बाजे टन टन टन,
गुड़िया नाचे छन छन छन।

घोड़ा भागे टप टप टप,
पानी बरसे छप छप छप।

चिड़िया करती चूं चूं चूं,
मुन्नी रोती ऊं ऊं ऊं।

मुरगा बोला कुकड़ूं कूं,
जागो बच्चो, आलस्य क्यों ?
उठो, उठो अब हुआ सवेरा,
भाग गया है दूर अंधेरा ।
सूरज ने आंखें हैं खोली,
चिड़ियें मीठी बोली बोली ।
ठण्डी ठण्डी हवा चली है,
महक रही सब कली कली है ।
शुरु करें हम अपना काम,
ले कर उस भगवान् का नाम ॥







मटका फूटा बिल्ली भागी,
खड़का सुन कर बुढ़िया जागी।

बुढ़िया ने जो फेंकी चप्पल,
सीधी लेटी बिल्ली चंचल।

बुढ़िया समझी मरी बिलाई,
बिल्ली कूदी, वह घबराई।





मिन्नी ने थी बकरी पाली,
कुछ सफेद थी औ कुछ काली

इस बकरी के बच्चे सारे,
छोटे छोटे प्यारे प्यारे ।

यह लेला कहलाता माला,
इसको मिन्नी ने है पाला ।

जहां कहीं मिन्नी है जाती,
माला पीछे भागी आती ।

जब मिन्नी जाती है स्कूल,
माला सुंघा करती फूल ।

जब मिन्नी घर वापस आती,
माला बढ़ कर पूंछ हिलाती।





बिल्ली बोली म्यांऊ म्यांऊ,
क्या मैं घर के अन्दर आऊं ?

लाई हूं यह मोटा दाना,
तुम चख चख कर इसको खाना।
गाना तुम्हें सुनाऊंगी मैं,
मीठी नींद सुलाऊंगी मैं ॥

चुहिया बोली, ना, ना, ना, ना,
मौसी, तुम अन्दर ना आना।
चाह नहीं है इस दाने की,
भूख नहीं है कुछ खाने की ॥

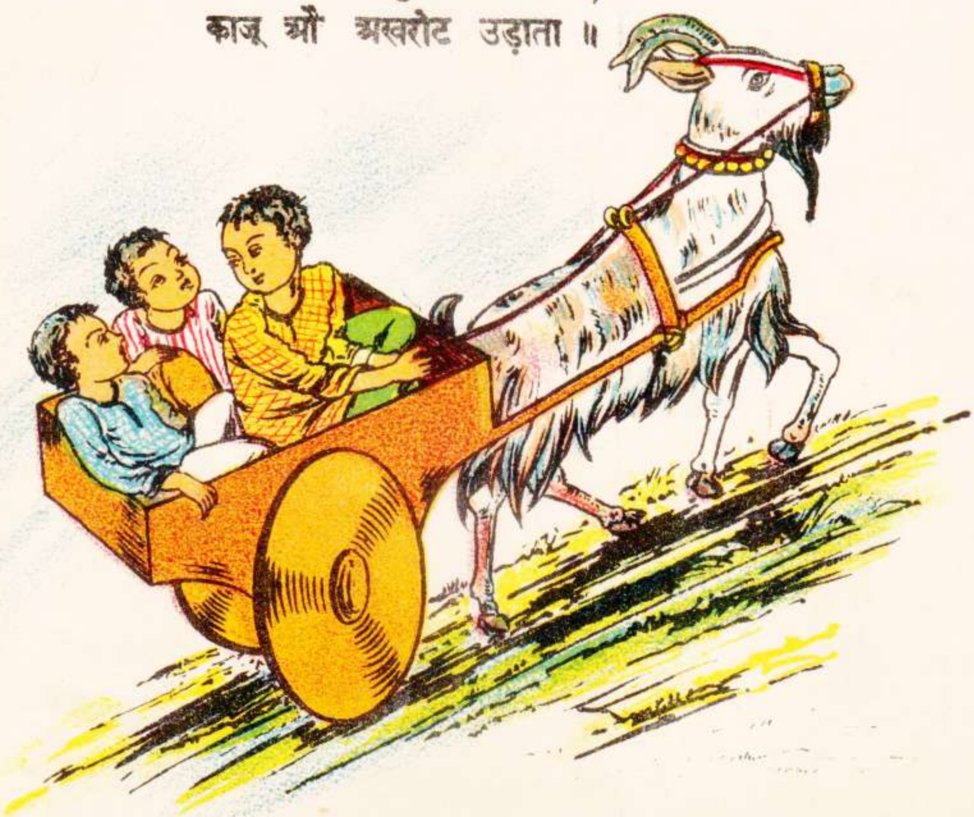
सुन म्याऊं म्याऊं का गान,
निकलें, अरे, हमारे प्राण।
करके दया यहां से जाओ,
अपना दाना तुम ही खाओ ॥

बकरा खींच रहा है गाड़ी.
इसकी कितनी लम्बी दाढ़ी ।

कहने को तो है यह बकरा,
पर देखो तो इसका नखरा ।

पेशावर से है यह आया,
एक अमीर इसे है लाया ।

घास नहीं बिल्कुल यह खाता,
काजू औ' अखरोट उड़ाता ॥



बैठ फूल पर
तितली सुन्दर

हंस कर बोली
मीठी बोली

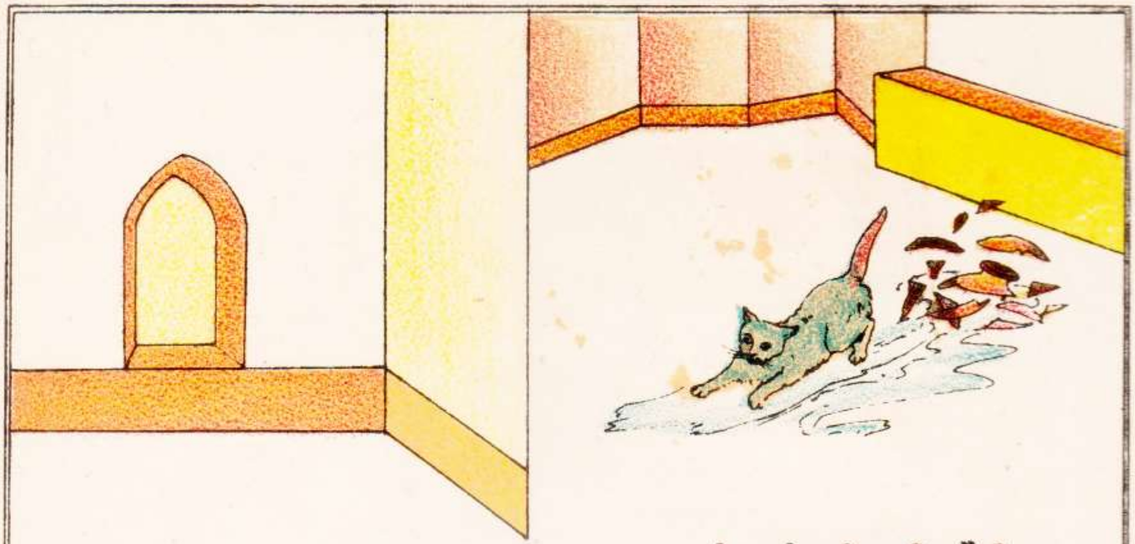
फूल न तोड़ो
मुझे न छेड़ो

सौरभ ले लो
मुझ से खेलो

तंग न करना
अच्छे बनना



भले बनोगे, नित आऊंगी
बुरे बनोगे, उड़ जाऊंगी ॥

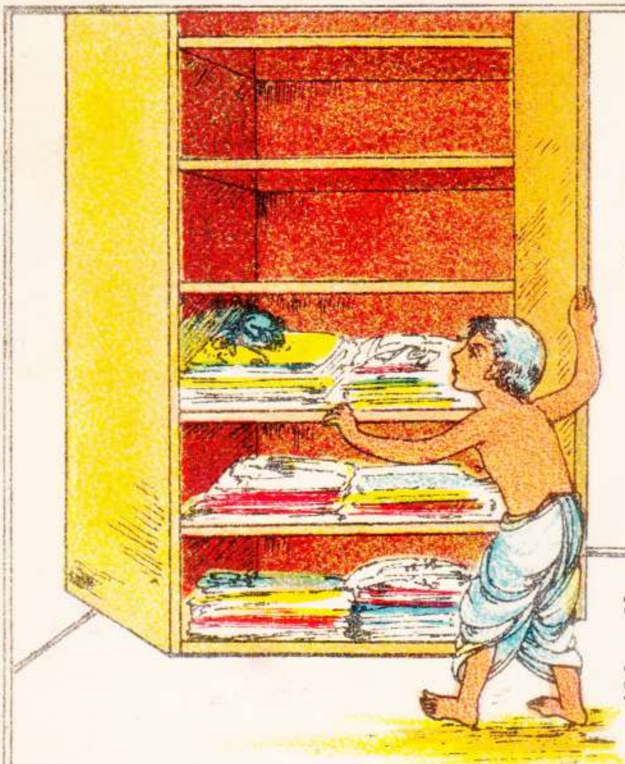


कहो कहो जी पूसी मौसी,
कहां घूम-फिर कर हो आई ?
कितनी चुहियां मारी तुमने,
खाई कितनी दूध-मलाई ?

बोली बिल्ली, कुछ न पूछो,
आज रही मैं भूखी ही ।
तीन मिली जो चुहियां मुझको,
पतली बिल्कुल सूखी सी ॥



चढ़ी कूद कर जब मैं ऊपर,
खाने को कुछ दूध-मलाई ।
मटकी फूटी नीचे गिर कर,
भागी मैं, औ' जान बचाई ॥



बब्बू ने अल्मारी खोली,
चीं चीं करके चुहिया बोली।

कोने में से झांक रही थी,
टुकर टुकर वह ताक रही थी।

बब्बू बोला-क्यों तू डरती,
कपड़े मेरे कुतरा करती ।

छोड़े जो यह गन्दी बात,
तुझे रक्खूंगा अपने साथ ।

तुझको पास बिठाऊंगा मैं,
मेवा खूब खिलाऊंगा मैं ॥

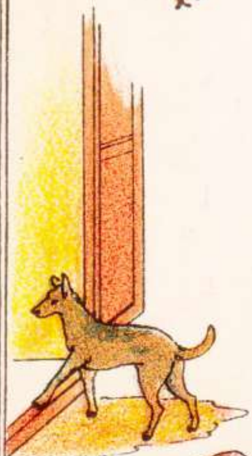




बैठी चावल चुनती बुढ़िया,
चावल गिरते आती चिड़िया ।
चावल चुग कर उड़ती चिड़िया,
बैठी मन में कुढ़ती बुढ़िया ।



रख कर चावल गई नहाने,
कुत्ता लगा लपालप खाने ।
थोड़ी सी थी खीर पकाई,
चुपके से बिल्ली ने खाई ।



भूखी रही आज तो बुढ़िया,
डाली पर गाती है चिड़िया।
बिल्ली बैठी छत के ऊपर,
कुत्ता गया पड़ोसी के घर ।







ऊपर मेवे का गोदाम,
नीचे रहते चूहे राम ।

सारा दिन चोरी का काम,
खाते पिस्ते और बादाम ।

आ जाए जो बिल्ली रानी,
मर जाएगी उनकी नानी ।

दीदी आई,
चाबी लाई ।

खोला ताला,
सेब निकाला ।

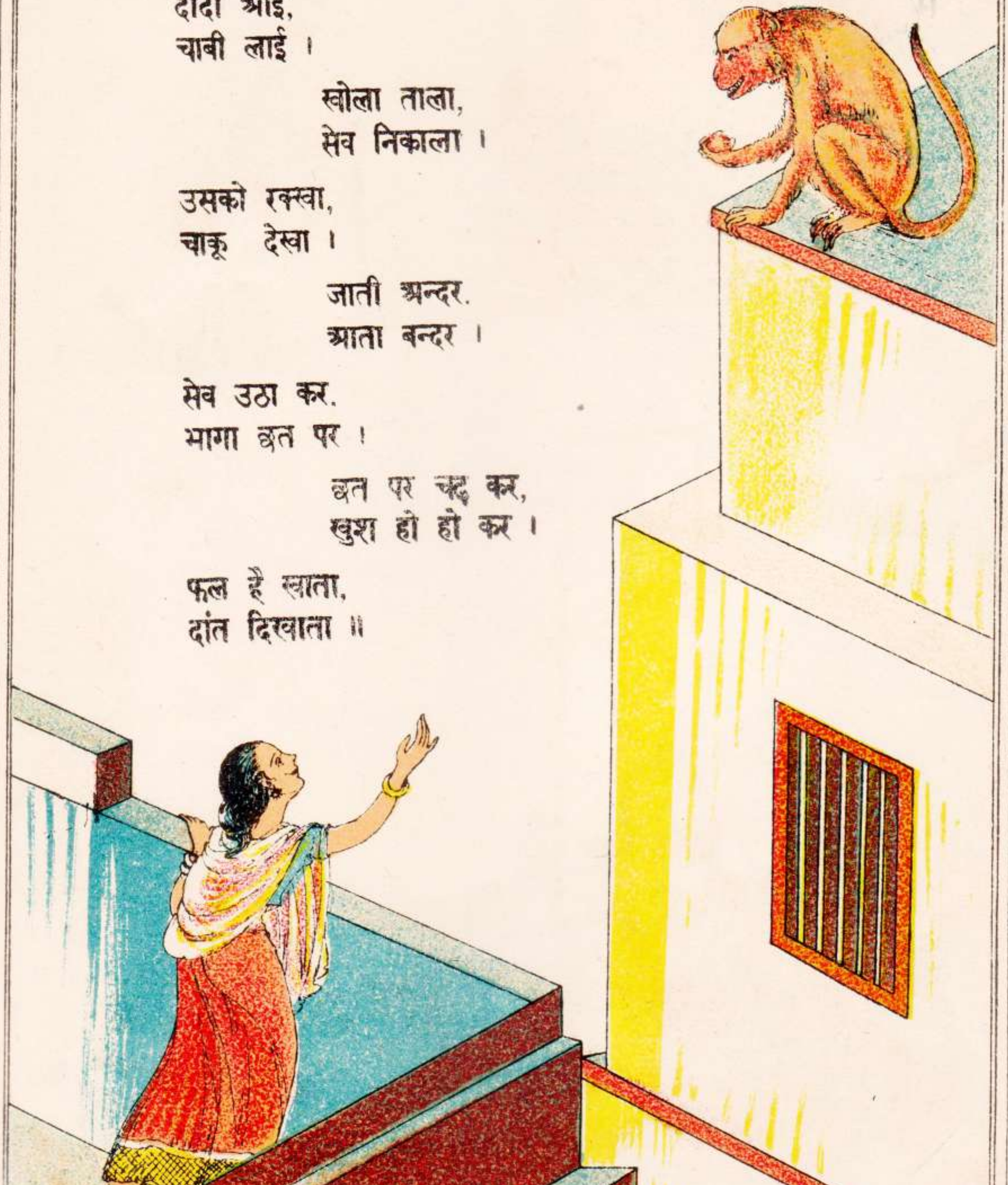
उसको रक्खा,
चाकू देखा ।

जाती अन्दर,
आता बन्दर ।

सेब उठा कर,
भागा छत पर ।

छत पर चढ़ कर,
खुश हो हो कर ।

फल है खाता,
दांत दिखाता ॥



मिन मिन मिनकू बड़े सयाने
घर के नौकर बड़े पुराने



इनकी साफ रेशमी दाढ़ी
बच्चों को लगती है प्यारी

कुछ करने से हैं लाचार
पर बच्चों पर इनका प्यार

मुंह में दांत सिर्फ़ दो चार
फिर भी जाते नित बाज़ार

घर का फल औ' मेवा लाते
बच्चों को खुद बैठ खिलाते



नित वह नई कहानी कहते
बच्चे सुनकर हंसते रहते

हंसते हंसते सब सो जाते
मिन मिन मिनकू खुश हो जाते॥



गोकुल में मचता है शोर
पकड़ो, भागा माखन चोर

गोपी भागी आगे पीछे
ढूंढ रही हैं ऊपर नीचे

कोई कहती छींका टूटा
कोई कहती मटका फूटा

कान्हा कोने में छुप जाता
चख चख कर माखन है खाता

खा–पी कर बन में है जाता
मीठी मीठी बंसी बजाता ॥







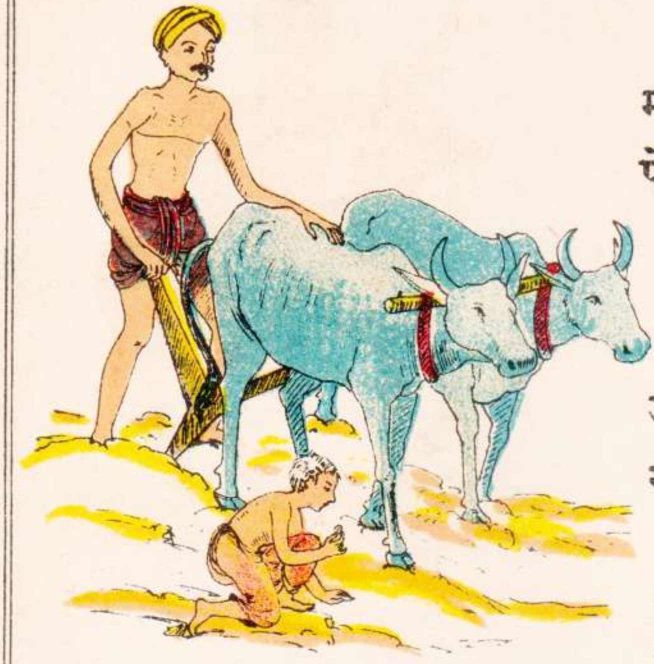
यह मेरा लकड़ी का घोड़ा,
एड़ लगाई सरपट दौड़ा।

देखो इसकी लाल लगाम,
झुक कर करता मुझे सलाम।

मुझे बिठा कर उड़ जाता है,
बादल से ऊंचा जाता है।

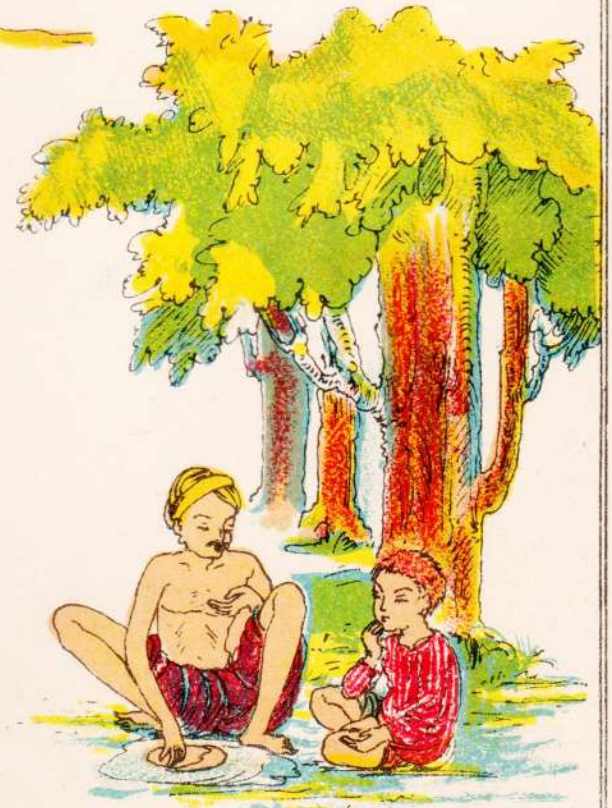
जब मैं कहता दाना खा लो,
बैठो थोड़ा सा सुस्ता लो।

कहता, भूख नहीं है मुझ को,
मेरा हिस्सा तुम ही खा लो॥



मन्नू ने यह पैसा पाया,
पैसा कहो, कहां से आया।

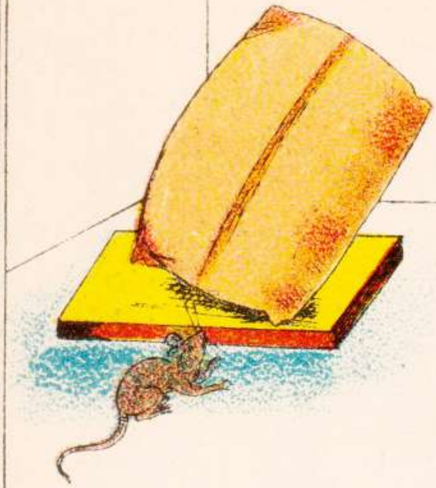
उसका बाबा एक किसान,
खेत में जाकर करता काम।



हल ले कर मन्नू भी आया,
मट्टी खोदी पैसा पाया।

पैसा ले कर गया बाज़ार,
लाया रोटी और आचार।

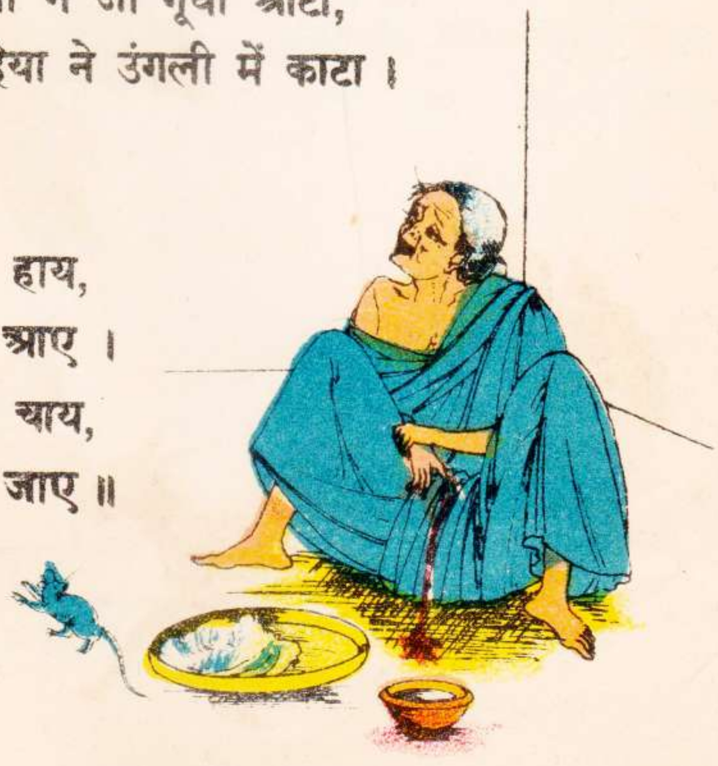
बाबा-बेटा मिल कर खाते,
बरगद के नीचे सो जाते॥



घर आई आटे की बोरी,
चुहिया निकली करने चोरी।
बोरी काट घुसी वह अन्दर,
छिप आटे में करती फर फर।

नानी ने जो गूंधा आटा,
चुहिया ने उंगली में काटा।

नानी बैठी करती हाय,
सारा खून निकलता आए।
जल्दी उसे पिलाओ चाय,
पकड़ो चुहिया भाग न जाए॥





आती एक गांव से गाड़ी,
बैठे तीन भिखारी ।
सुनो, नाम हैं छांगा मांगा,
और एक गिरधारी ।

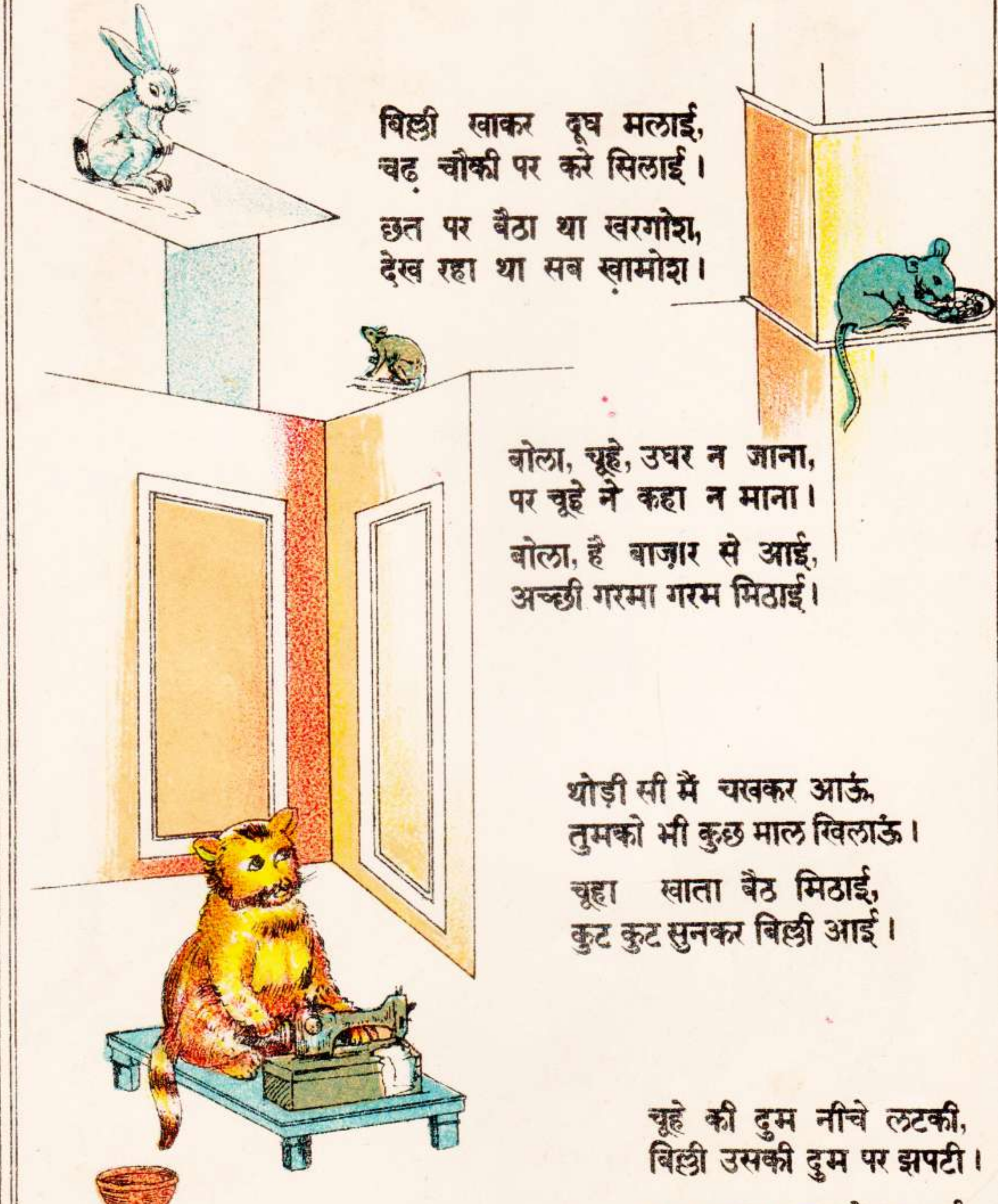
छांगा गूंगा, मांगा बहरा,
गिरधारी है काना ।
छांगा मांगा दोनों बुद्धू,
काना बड़ा सयाना ।

छांगा मांगा रोज शहर से,
भीख मांग कर लाते ।
काना बैठ करे बटवारा,
तीनों मिल कर खाते ।

यदि वे दोनों छांगा मांगा,
पैसे कुछ पा जाते ।
काना बैठा पैसे गिनता,
जब दोनों सो जाते ।







बिल्ली खाकर दूध मलाई,
चढ़ चौकी पर करे सिलाई।

छत पर बैठा था खरगोश,
देख रहा था सब खामोश।

बोला, चूहे, उधर न जाना,
पर चूहे ने कहा न माना।

बोला, है बाज़ार से आई,
अच्छी गरमा गरम मिठाई।

थोड़ी सी मैं चखकर आऊं,
तुमको भी कुछ माल खिलाऊं।

चूहा खाता बैठ मिठाई,
कुट कुट सुनकर बिल्ली आई।

चूहे की दुम नीचे लटकी,
बिल्ली उसकी दुम पर झपटी।

चूहा भागा जान तो बच गई,
जान बची पर दुम तो कट गई।




एक बार इक नन्हीं चिड़िया,
फुदक फुदक कर आती थी।
ठहरो, ठहरो, चिड़िया ठहरो,
मंजु खड़ी चिल्लाती थी।



मुट्ठी में चावल भर, कहती,
जाना खाना खा कर के
डर कर फुर से उड़ती चिड़िया,
छोटी पूंछ हिला कर के॥



बिजली चमकी,
देती धमकी।

बादल आए,
वर्षा लाए।

बूंदें बरसें,
निकलो घर से।

मचता शोर,
नाचें मोर।



पकड़ो हाथ,
चलेंगे साथ।

मिल कर गाएं,
मौज मनाएं।



यह मेरे धोबी का खोता,[1]
ची पों ची पों करके रोता ।

दिन भर खड़ा घास है चरता,
औं' मट्टी में लोटा करता ।

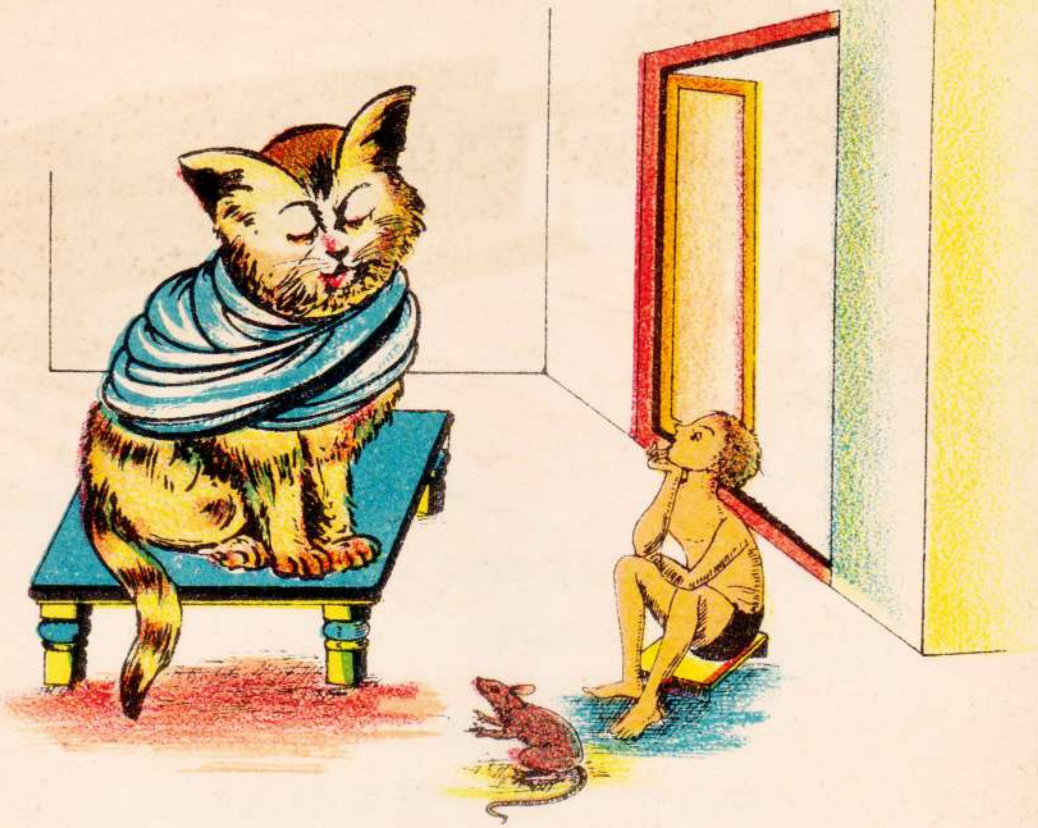
धोबी इस पर कपड़े लादे,
कभी कभी यह सरपट भागे।

कभी कभी यह अड़ जाता है,
सारा खेल बिगड़ जाता है ।

धोबी कहता, भाग निखट्टू,
मार खायगा, अड़ियल टट्टू ।



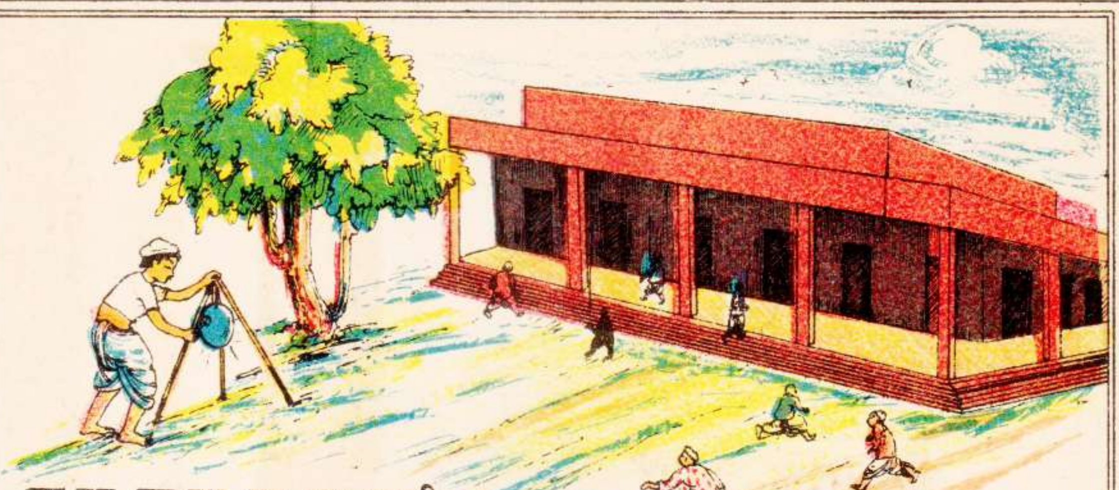
१ गधा.



बिल्ली ने इक चादर पाई,
बन कर बैठी भगतन बाई।

कहती, अब मैं तो हूं बुढ़िया,
कभी न पकड़ूं चूहे चिड़िया।

दे देना कुछ दूध-मलाई,
बैठी नाम जपूंगी भाई।



टन नन टन नन टन नन टनकी
सुन लो बच्चो बजती घंटी
कहती, बच्चो आओ स्कूल
खेल–कूद अब जाओ भूल

पहले मिल कर कर लो विनती
फिर सब सीखो अपनी गिनती
टन नन टन नन टन नन टनकी
फिर से बजती है यह घंटी

यह छुट्टी कुछ खाने की है
रलमिल मौज मनाने की है
जल्दी से कुछ खा पी आओ
फिर कक्षा में वापस जाओ



गुरु को अपना पाठ सुनाओ
कापी में क्या लिखा दिखाओ
टन नन टन नन टन नन टनकी
बच्चो बजती अन्तिम घंटी

यह छुट्टी घर जाने की है
हंसने और हंसाने की है
गाते गाते घर को जाओ
खेलो, कूदो, खुशी मनाओ

मेरी छोटी गुड़िया टिकली,
आज सैर करने को निकली।

लेकर बटुआ, सर पर टोपी,
साथ एक बबुआ ले लौटी।

पूछा मैं ने, यह है कौन,
कहती, इसका नाम है जौन।

मैं ने कहा, कहां से आया,
कहती, यह लन्दन से आया।

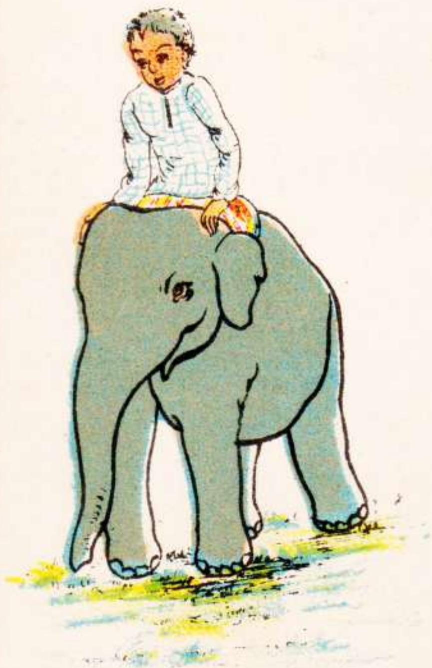


कल मैं इससे ब्याह करूंगी,
कभी नहीं इससे झगड़ूंगी ॥

देखो यह छोटा सा हाथी,
यह है मेरा प्यारा साथी ।

हरदम मेरे पीछे आता,
सूंड हिलाता कान झुलाता





कभी कभी मैं थक जाता हूं,
इसके ऊपर चढ़ जाता हूं ।

हाथी लेट वहीं पर जाता,
अपना खाली पेट दिखाता ।



कहता, लाओ, चूरी गन्ना,
अरे , सवारी पीछे करना ।



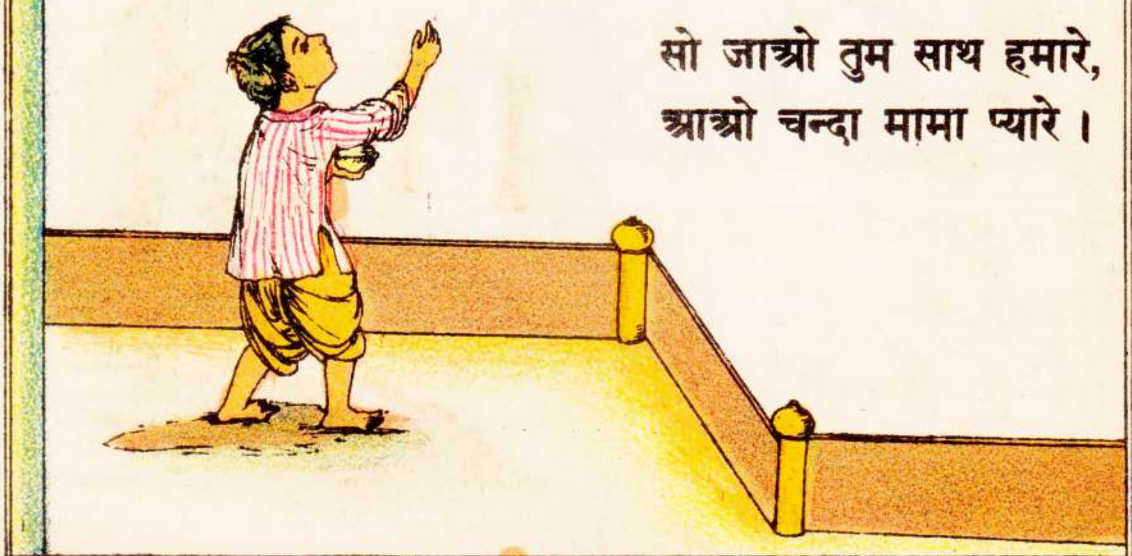
आओ चन्दा मामा आओ,
आ जाओ मत देर लगाओ।

देखो बीती कितनी रात,
लाया हूं मैं बढ़िया भात।

जल्दी से आ कर खा जाओ,
आ जाओ मत देर लगाओ।

दादी मुझको बुला रही है,
मीठी लोरी सुना रही है।

सो जाओ तुम साथ हमारे,
आओ चन्दा मामा प्यारे।

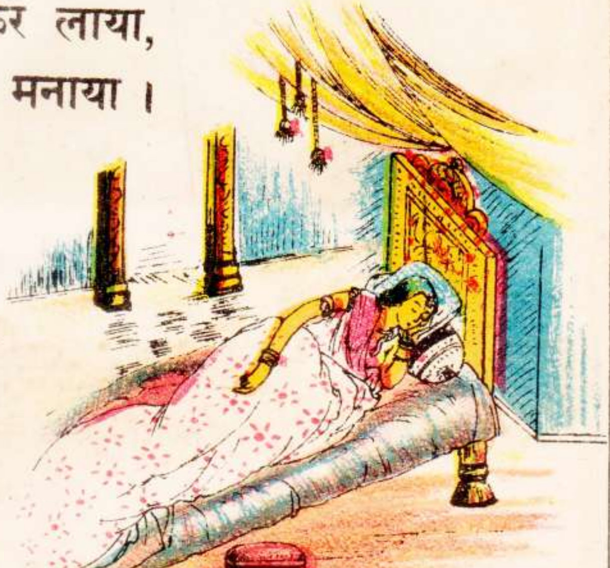




सुन लो मेरी एक कहानी,
राजा एक, एक थी रानी ।

घोड़े पर हो सुबह सवार,
राजा जंगल गया शिकार ।

राजा शेर मार कर लाया,
रानी ने आनन्द मनाया ।



दावत दी, सब नगर बुलाया,
राजा बड़ा वीर कहलाया ।

खा–पी कर सोती है रानी,
बच्चो, मेरी ख़त्म कहानी ॥



— प्रकाशक —
जनता चित्र लिमिटेड, बम्बई.

— मुद्रक —
श्री सिद्ध लिथो वर्क्स् बम्बई ४